प्रमुख गुरुद्वारा साहिब

गुरुद्वारा श्री तेग बहादुर साहिब, थानेसर

सिक्ख धर्म के नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी 1670 में अपने मालवा दौरे के दौरान यहाँ आए थे और यहाँ पर उन्होंने संगत और संतों को अध्यात्म के मार्ग पर चलने का उपदेश दिया था।

गुरुद्वारा थड़ा साहिब

यह गुरुद्वारा सिक्ख धर्म के नौवें गुरु, गुरु तेग बहादुर जी के चरण स्पर्श प्राप्त गुरुद्वारा है। बाबा मक्खन शाह जी के द्वारा श्री गुरु तेग बहादुर जी की सिक्खों के नौवें गुरु साहिब के रूप में सार्वजनिक घोषणा के तुरंत बाद, गुरु साहिब जी श्री हरमंदिर साहिब अमृतसर में दर्शन के लिए आए। वहां रहने वाले पुजारियों को लगा कि गुरुजी के आने से उनकी रोजी-रोटी बंद हो जाएगी। इस विचार के साथ उन्होंने हरमंदिर साहिब के दरवाजे बंद कर दिए और वहां से चले गए। तब गुरु तेग बहादुर साहिब जी ने बाहर से ही मत्था टेका और श्री अकाल तख्त साहिब के पास स्थित बेरी के नीचे (थड़े-चबूतरे) पर बैठ गए। बाद में इस स्थान पर सुंदर गुरुद्वारे का निर्माण किया गया। यह गुरुद्वारा श्री थड़ा साहिब के नाम से प्रसिद्ध है।

गुरुद्वारा बूड़िया साहिब, यमुनानगर

गुरुद्वारा बुड़िया साहिब यमुनानगर जगाधरी में सिक्खों का एक पवित्र स्थल है। ऐसी मान्यता है कि गुरु तेग बहादुर जी ने अपनी यात्रा के दौरान यहां का दौरा किया था।

गुरुद्वारा लखनौर साहिब, अंबाला

गुरुद्वारा श्री लखनौर साहिब सिक्ख धर्म में विशेष स्थान रखता है। यहाँ पर हिन्द की चादर श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की पत्नी और श्री गुरु गोबिंद सिंह जी की माता माँ गुजरी जी का जन्म हुआ था। 5 वर्ष की आयु में सम्वत 1728 में गुरु गोबिन्द सिंह, माता गुजरी और दादी नानकी के साथ कुरुक्षेत्र के रास्ते लखनौर साहिब आए और उन्होंने यहां लगभग 6 माह तक निवास किया था।

गुरुद्वारा गढ़ी नजीर, कैथल

गुरुद्वारा श्री गढ़ी नजीर साहिब सिक्ख धर्म में प्रमुख स्थान रखता है। इस गरुद्वारे को श्री गुरु तेग बहादुर जी की चरण भूमि भी कहा जाता है। श्री गुरु तेग बहादुर जी अपनी शहीदी यात्रा के दौरान दिल्ली जाते हुए यहां रुके थे। मुहम्मद खान ने गुरु साहिब को गढ़ी नजीर आने को कहा था तब मुहम्मद खान की प्रार्थना स्वीकार करके गुरु साहिब गढ़ी नजीर आए और कुछ दिन यहाँ रुके थे।

गुरुद्वारा नीम साहिब, कैथल

गुरुद्वारा नीम साहिब हरियाणा के कैथल में स्थित है। यह गुरुद्वारा नौवें गुरु, गुरु तेग बहादुर साहिब जी को समर्पित है। गुरुजी प्रातःकाल ठण्डहर तीर्थ पर स्नान करके यहाँ पर स्थित एक नीम के पेड़ के नीचे ध्यानमग्न थे। अनेक श्रद्धालु उनके दर्शनार्थ आने लगे, श्रद्धालुओं में एक ज्वर से पीड़ित व्यक्ति भी था। गुरुजी ने उसे नीम के पत्ते खाने के लिए दिए और खाते ही वह स्वस्थ हो गया। इसी स्थान पर कालान्तर में एक गुरुद्वारे का निर्माण हुआ, जिसे नीम साहिब के नाम से जाना गया।

गुरुद्वारा धमतान साहिब, जींद

गुरुद्वारा श्री धमतान साहिब सिक्खों के नौवें गुरु, गुरु तेग बहादुर जी की दिल्ली यात्रा स्मृति के प्रतीक के रूप में विशेष स्थान रखता है। श्री गुरु तेग बहादुर जी दिल्ली जाते समय करीब 3 महीने यहां ठहरे और लोगों को सच्चाई के मार्ग पर चलने का संदेश दिया था। यह गुरुद्वारा गुरु जी की यात्रा की स्मृति में बनाया गया था। 500 एकड़ क्षेत्र में किले की तरह बना हुआ यह गुरुद्वारा स्थानीय लोगों ने गुरु तेग बहादुर जी को उपहार में दिया था। तख्त श्री हजूर साहिब नांदेड़ जाने वाली संगत इस स्थान पर दर्शन करके जाती है। गुरुद्वारा परिसर में एक सरोवर भी है, जहां श्रद्धालु स्नान करते हैं।

गुरुद्वारा मंजी साहिब, रोहतक

मंजी साहिब गुरुद्वारा हिन्दू व सिक्ख धर्म के लिए पवित्र स्थान है। यहां देश ही नहीं बल्कि विदेशों से भी संगत मत्था टेकने के लिए पहुँचती है। इस तीर्थस्थल पर नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादुर जी आनंदपुर साहिब से चलकर दिल्ली जाते समय 17 सितंबर 1675 ई. को 5 सिक्खों सहित यहां आए और 13 दिनों तक यहाँ रुककर अपने चरणों की धूल से इस स्थान को पवित्र किया था।

गुरु गद्दी

सिक्ख धर्म के प्रथम गुरु, गुरु नानक देव जी के पदचिह्नों पर चलते हुए उनकी शिक्षाओं व सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार एवं लोककल्याण के उद्देश्य से गुरु तेग बहादुर जी ने देश में अनेक यात्राएं की थी। इन यात्राओं के दौरान गुरु साहिब ने करतारपुर, कुरुक्षेत्र, प्रयाग, बनारस, पटना, असम, बंगाल, रोपड़, सैफाबाद, रोहतक, हिसार, अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, कानपुर, फतेहपुर, आगरा, दिल्ली आदि स्थानों का दौरा कर लोगों में अध्यात्म, धर्म एवं जनकल्याण की भावनाओं को बढ़ाया। गुरु तेग बहादुर जी जिन-जिन स्थानों से गुजरे थे वे आज प्रमुख सिक्ख स्थलों में शामिल हैं। गुरु तेग बहादुर जी के धर्मरक्षार्थ बलिदान के बाद उनके नौ वर्षीय सुपुत्र उनके उत्तराधिकारी बने और उन्हें सिक्खों के 10 वें गुरु, श्री गुरु गोबिंद सिंह के नाम से जाना गया। बाद में गुरु गोबिन्द सिंह जी ने खलासा पंथ की स्थापना की और गुरु परम्परा को विराम देते हुए सिक्खों के पवित्र ग्रंथ, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को सिक्खों का अनन्त गुरु घोषित किया।

GOVT. OF HARYANA

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिंद की चादर
श्री गुरु तेग बहादुर जी
का
400वां प्रकाश पर्व

रविवार, 24 अप्रैल, 2022 | सुबह 9 बजे से

सेक्टर 13-17 ग्राउंड, पानीपत (हरियाणा)

संदेश

धर्म एवं मानवीय मूल्यों, आदर्शों एवं सिद्धान्तों की रक्षा के लिए स्वयं के प्राणों की आहुति देने वालों में नौवें गुरु श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का स्थान अद्वितीय है। उनके इस अद्वितीय त्याग एवं बलिदान के लिए वे हिन्द की चादर कहलाए।

श्री गुरु तेग बहादुर जी का आगमन एक ऐसे युग में हुआ था जिस समय देश में कट्टर इस्लामिक शासक औरंगजेब के शासन में गैर-इस्लामिक धर्मों के खिलाफ अत्याचार एवं धर्मपरिवर्तन हो रहा था। उस समय देश में सामाजिक कुरीतियों, रूढ़ियों, धार्मिक पाखंड, अंधविश्वास, छुआछूत, जाति-पाति, भेदभाव जैसी अनेक समस्याएँ अपने चरम पर थीं। गुरुसाहिब ने जगह-जगह घूमकर लोगों के आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक उन्नयन के लिए अनेक लोककल्याण के कार्य किए। उन्होंने सामाजिक स्तर पर चली आ रही कुप्रथाओं, कुरीतियों, रूढ़ियों व पाखंड, अंधविश्वास की कटु आलोचना कर नए सहज जनकल्याणकारी आदर्श स्थापित किए। उनके द्वारा धर्म और मानवीय मूल्यों की रक्षा हेतु स्वयं बलिदान देकर एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया गया। गुरु जी के इसी अद्वितीय बलिदान के कारण देश में अभूतपूर्व बदलाव आए।

वर्तमान सरकार पहली बार अपने स्तर पर ऐसे धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रम का आयोजन कर रही है जिसमें सभी धर्मों को पूरा आदर, सत्कार देने के साथ-साथ धर्म गुरुओं, महान संतों तथा महापुरुषों की जयंती मिल-जुल कर मनाने पर बल दिया गया है। इसी विश्वास के साथ प्रदेश सरकार द्वारा पानीपत में हिन्द की चादर श्री गुरु तेग बहादुर जी के 400 वें प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में विशाल कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम को लेकर देश भर में अत्यंत उत्साह है। प्रदेश सरकार ने लोगों की आस्था को देखते हुए बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए भी बस सुविधा का प्रबंध भी किया है।

वर्तमान युग में गुरु तेग बहादुर जी का जीवन, उनकी वाणी, शिक्षाएं, उनका त्याग व बलिदान हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत है। गुरु जी ने समाज में ऊंच-नीच, जाति-पाति एवं धर्म विशेष का भेदभाव समाप्त करने के लिए अथक प्रयास करते हुए परस्पर भाईचारे व प्रेम को अपनाने का संदेश दिया। गुरु तेग बहादुर जी का जीवन, शिक्षाएं और वाणी आज भी हम सबका मार्ग प्रशस्त कर रही हैं।

मनोहर लाल
(मुख्यमंत्री, हरियाणा)

जीवनी

भारतवर्ष के इतिहास में ऐसे अनेक संत-महात्माओं एवं दिव्य महापुरुषों ने जन्म लिया है जिन्होंने दुनिया को अध्यात्म के मार्ग पर चलते हुए धर्म एवं मानवीय मूल्यों की रक्षा करने के लिए अपना सर्वस्व तक बलिदान करने की प्रेरणा दी है। ऐसे ही एक दिव्य संत सिक्ख पंथ के नौवें गुरु, गुरु तेग बहादुर जी हुए हैं। उन्होंने प्रथम गुरु, गुरु नानक जी द्वारा बताए गये मार्ग का अनुसरण करते हुए सामाजिक स्तर पर चली आ रही रूढ़ियों, अंधविश्वासों की कटु आलोचना कर नए सहज जनकल्याणकारी आदर्श स्थापित किए। विश्व इतिहास में धर्म एवं मानवीय मूल्यों, आदर्शों एवं सिद्धान्तों की रक्षा के लिए स्वयं के प्राणों की आहुति देने वालों में श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का स्थान अद्वितीय है।

जन्म एवं प्रारम्भिक जीवन

हिन्दू धर्म के रक्षक, भारतवर्ष का स्वाभिमान, अमन शांति के अवतार, कुर्बानी के प्रतीक, सिक्खों के नौवें गुरु साहिब श्री गुरु तेग बहादुर जी का जन्म अप्रैल 1621 को अमृतसर में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी व माता का नाम नानकी जी था। गुरुजी के बचपन का नाम त्यागमल था। सन् 1632 में गुरु तेग बहादुर जी का विवाह करतारपुर निवासी श्री लाल चंद जी की सुपुत्री माता गुजरी जी से हुआ।

गुरुद्वारा श्री आनंदपुर साहिब

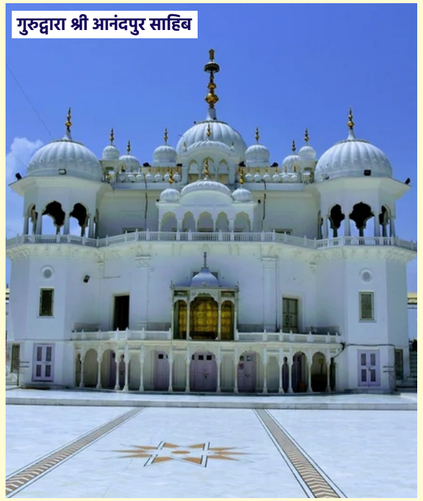

आप बचपन से ही बड़े बहादुर तथा निर्भीक और शस्त्र विद्या में प्रवीण थे। गुरुजी ने मात्र 14 वर्ष की आयु में अपने पिता के साथ मुगलों के खिलाफ युद्ध लड़ा और युद्ध में उनकी वीरता से प्रभावित होकर उनके पिता ने उनका नाम तेग बहादुर (तलवार के धनी) रख दिया। युद्धस्थल में भीषण रक्तपात से गुरु तेग बहादुर जी के वैरागी मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और वह आध्यात्मिक चिंतन की ओर मुड़ गए और 20 वर्ष की आयु तक बाबा बकाला साहिब में साधना की।

धर्म एवं मानवीय मूल्यों व आदर्शों की रक्षा हेतु संदेश

गुरु तेग बहादुर सिंह जी ने मानव कल्याण हेतु, आध्यात्मिकता, धर्म और सच्चाई का ज्ञान लोगों को वितरित किया। उन्होंने रूढ़ियों, अंधविश्वासों की आलोचना करते हुए नए समाज में आदर्शों की स्थापना की और देश एवं देश के नागरिकों के हितों के लिए देश की संस्कृति को सुदृढ़ बनाया। गुरु जी ने लोगों को स्वतंत्रता व निर्भीकता के साथ जीवन जीने का रास्ता दिखाया। जब तत्कालीन मुगल सम्राट औरंगजेब ने कश्मीर के ब्राह्मण विद्वानों को इस्लाम अपनाने के लिए मजबूर किया, तब भयभीत होकर कश्मीरी पंडित गुरु तेग बहादुर जी की शरण में आनंदपुर आए। उनकी अगुवाई कर रहे पंडित कृपाराम ने गुरु जी से मदद की गुहार लगाई। तब गुरुजी ने पंडितों से कहा कि आप जाकर बादशाह से कह दें कि यदि वह मुझे मुसलमान बनाने में सफल रहे तो आप सब भी मुस्लिम धर्म अपना लेंगे। इसके बाद गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा आश्वासन देने पर कि उनसे महान शख्सियत और कोई नहीं हो सकती जो धर्म की रक्षा के लिए स्वयं की शहीदी दे। वे स्वयं की शहीदी देने के लिए आनंदपुर से दिल्ली की तरफ चल पड़े। उन्हें धमतान साहिब जीन्द से गिरफ्तार करके दिल्ली लाया गया। आठ दिनों की अमानवीय यातनाओं के बाद 24 नवंबर 1675 को दिल्ली के चांदनी चौक पर गुरु जी का शीश उनके धड़ से अलग करके उन्हें शहीद कर दिया गया। आज भी हमें दिल्ली स्थित गुरुद्वारा शीश गंज साहिब तथा गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब गुरु जी द्वारा धर्म रक्षा के लिए दिए गए बलिदान एवं मुगल शासक औरंगजेब द्वारा की गई बर्बरता का स्मरण दिलाते हैं। ये वही स्थान हैं, जहाँ गुरुजी को शहीद किया गया और जहाँ उनका अन्तिम संस्कार किया गया था। अपने त्याग और बलिदान के लिए वह सही अर्थों में 'हिन्द की चादर' कहलाए।

सिक्ख धर्म के सिद्धांत

गुरु तेग बहादुर जी ने गुरु नानक देव जी द्वारा बताए गए मार्ग व सिद्धांतों का अनुसरण करते हुए वर्षों से चली आ रही सामाजिक कुरीतियों, रूढ़ियों, कुप्रथाओं एवं धार्मिक अंधविश्वासों की कटु आलोचना की। उन्होंने नए सहज जनकल्याणकारी आदर्श स्थापित करते हुए अध्यात्म के मार्ग पर चलने का संदेश दिया और समाज में फैले ऊंच-नीच, जाति-पाति व छुआछूत का विरोध किया। गुरु जी ने धर्म की स्थापना एवं मानवीय मूल्यों व सिद्धांतों की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व बलिदान कर त्याग का अद्वितीय उद्धारण प्रस्तुत किया।

दस सिद्धांत व शिक्षाएं

1. **ईश्वर एक व सर्वशक्तिमान है।**
2. **सदैव एक ही ईश्वर की उपासना करो।**
3. **जगत का कर्ता सब जगह और सब प्राणियों में मौजूद है।**
4. **सर्वशक्तिमान ईश्वर की भक्ति करने वालों को किसी का भी भय नहीं रहता।**
5. **ईमानदारी से मेहनत करके उदरपूर्ति करनी चाहिए।**
6. **बुरा कार्य करने के बारे में न सोचें और न किसी को सताएं।**
7. **सदा प्रसन्न रहना चाहिए। ईश्वर से सदा स्वयं के लिए क्षमाशीलता मांगनी चाहिए।**
8. **मेहनत और ईमानदारी से कमाई करके उसमें से जरूरतमंदों की मदद करनी चाहिए।**
9. **सभी स्त्री और पुरुष बराबर है।**
10. **भोजन शरीर को ज़िंदा रखने के लिए जरुरी है, परन्तु लोभ-लालच व संग्रहवृत्ति बुरी आदत है।**

गुरु तेग बहादुर जी की शिक्षाएं

- गुरु तेग जी ने कहा था कि धर्म एक मज़हब नहीं, धर्म एक कर्तव्य है, आदर्श जीवन का मार्ग है।
- सभी जीवित प्राणियों के प्रति सम्मान की भावना उत्तम धर्म है।
- एक सज्जन व्यक्ति वह है जो अनजाने में भी किसी की भावनाओ को ठेस ना पहुँचाए।
- आध्यात्मिक मार्ग पर दो सबसे कठिन परीक्षण हैं, सही समय की प्रतीक्षा करने का धैर्य और जो सामने आए उससे निराश ना होने का साहस।
- हर एक जीवित प्राणी के प्रति दया रखो, घृणा से विनाश होता है।
- गलतियाँ हमेशा क्षमा की जा सकती हैं, यदि आपके पास उन्हें स्वीकारने का साहस हो।
- हार और जीत यह आपकी सोच पर ही निर्भर है, मान लो तो हार है ठान लो तो जीत है।
- दिलेरी डर की गैरमौजूदगी नहीं, बल्कि यह फैसला है कि डर से भी जरुरी कुछ है।

गुरु जी की रचनाएं

नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादुर जी महान कवि और विचारक थे। गुरु तेग बहादुर जी की रचनाएँ वैराग्य से परिपूर्ण व सरल भाषा में रची गई है। उन्होंने लोककल्याण व धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु 15 रागों में 57 श्लोको व 59 शब्दों की रचना की। उनकी रचना को गुरु गोबिंद सिंह जी ने श्री गुरुग्रन्थ साहिब में दर्ज करवाया। उनकी रचना के वैराग्य पूर्ण होने के कारण उन्हें वैराग्य पुंज भी कहा जाता है।

गुरुबाणी

प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नाही वीसरिआ॥
तनु सूचा सो आखीऐ जिसु महि साचा नाउ॥
सो सेवहु सति निरंजनो हरि पुरखु बिधाती॥

विणु नावै पति गइआ॥
विणु नावे होरु धनु नाही होरु बिखिआ सभु छारा॥
नानक लिलारि लिखिआ सोइ॥
मोटि न साकै कोई॥
नानक साहिबु मनि वसै सचा नावणु होइ॥
सतिगुरु सेवि निसंगु भरमु चुकाईऐ॥
नानक गुरु संतोखु रुखु धरमु फुलु फल गिआनु॥
नानक बोलणु, झखणा दुखु छडि मंगीअहि सुखा॥

नानक सदा सोहागणी जिन जोती जोति समाइ॥
नानक असथिर नामु रजाइ॥
अखी अंधु जीभ रसु नाही कनी पवणु न वाजै॥
आखा जीवा विसरै मरि जाउ॥

नानक राम नामु मनि भावै॥
बिनु गुर सेवे सहजु न होवै॥

सुखदाता सेवे निरमलु होइ॥
ना जाणा मूरखु है कोई ना जाणा सिआणा॥
नानक सोई सेविऐ जितु सेविऐ दुखु जाइ॥

नानकु आखै रे मना सुणीऐ सिख सही॥
अब ही कब ही किछू न जाना तेरा एको नामु पछाना॥

नानक साधू संगि जनमु मरणु सवारिआ॥
अंति न साहिबु सिमरिआ जाई॥
नानक साई भली परीति जितु साहिब सेती पति रहै॥
नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ॥
नानक अगै सो मिले जि खटे घाले देइ॥
मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु॥
बिनु गुर सेवे सहजु न होवै॥

अखी अंधु जीभ रसु नाही कंनी पवणु न वाजै॥
नानक असथिरु नामु रजाइ॥
नानक सदा सोहागणी जिन जोती जोति समाइ॥
नानक सो सालाहीऐ जिसु वसि सभु किछु होइ॥

घालि खाइ किछु हथहु देइ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ॥
धिंगु तिना का जीविआ जि लिखि लिखि वेचहि नाउ॥
नानक चुलीआ सुचीआ जे मरि जाणे कोइ॥
आखणि अउखा सुनणि अउखा आखि न जापी आखि॥
मनि मुखि नामु जपहु जगजीवन रिद अंतरि अलखु लखाइआ॥